जीविका को लेकर समस्या क्यों?

यदि मैं इस तरह का जीवन बिता रहा हूँ जिसमें आन्तरिक द्वंद्व नहीं है तब मेरे लिए क्या करने को रह जाता है? आप समझ रहे हैं इसका क्या अर्थ है? जब आन्तरिक रूप से कोई द्वंद्व नहीं होता तो बाह्य रूप से भी कोई द्वंद्व नहीं रहता, क्योंकि बाहर और भीतर के बीच विभाजन समाप्त हो जाता है। आप समझे? यह ज्वार-भाटे की तरह है, समुद्र चढ़ता है और उतरता है; जब मनोवैज्ञानिक रूप से कोई द्वंद्व नहीं होता तो बाहरी तौर पर भी कोई द्वंद्व नहीं रहता है, जब ज्वार नहीं होता है तो भाटा भी नहीं होता। आप समझे? अतः मुझे क्या करना होगा? दुर्भाग्यवश मुझे अपनी जीविका कमानी होगी - व्यक्तिगत रूप से मुझे नहीं कमानी पड़ती। मैं नहीं कमाता क्योंकि व्यक्तिगत रूप से मुझे इसको लेकर कोई समस्या नहीं है। लेकिन आपके पास जीविका कमाने की समस्या है। जीविका न कमाने को लेकर मुझे कोई समस्या क्यों नहीं है? इसका कारण बहुत सरल है! क्या आप जानने की प्रतीक्षा में हैं? ठीक है, तो मुझे इसे लेकर कोई समस्या इसलिए नहीं है क्योंकि मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता कि आगे क्या होगा। आप समझे? मैं इस बात पर ध्यान ही नहीं देता कि मैं सफल होऊंगा या नहीं, मैं इस बात की परवाह ही नहीं करता कि मेरे पास धन होगा या नहीं - और, भगवान का शुक्र है कि निजी तौर पर मेरे पास कोई धन नहीं है। मुझे धन नहीं चाहिए, परन्तु मुझे भोजन, वस्त्र और आश्रय की आवश्यकता है, यदि कोई दे देता है तो ठीक है, यदि नहीं देता है तो मैं जहाँ हूँ वहीं रहूँगा। आप मेरा प्रश्न समझे? मुझे कोई समस्या नहीं है, क्योंकि मैं किसी से अथवा जीवन से कोई माँग नहीं करता। पता नहीं आप इसे समझ रहे हैं या नहीं।

तो मैंने यह बता दिया, लेकिन मेरा जीने का तरीका आपके जीने के तरीके से बिलकुल भिन्न है। अतः यदि मुझे जीविका कमानी पड़े तो मुझे क्या करना चाहिए? जबकि मेरे अंदर मनोवैज्ञानिक रूप से किसी भी प्रकार का द्वंद्व नहीं है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है? यह कैसे हुआ कि मुझे कोई द्वंद्व नहीं है? क्या यह एक सिद्धान्त है, एक इच्छा है जो पूरी हो गई? क्या यह एक भ्रम है, क्या ऐसा कुछ है कि मैंने अपने को इस तरह से सम्मोहित कर लिया है? आप मेरा प्रश्न समझे? अथवा यह एक निश्चित, अपरिवर्तनीय तथ्य है जिसे कोई नहीं बदल सकता, कोई खंडित नहीं कर सकता, जिसे आप छू तक नहीं सकते। अतः, यदि ऐसा हमारे साथ है तब हम साथ मिलकर जीविका कमाने के लिए क्या कर सकते हैं? क्योंकि यहाँ कोई द्वंद्व नहीं है और इसलिए कोई महत्त्वाकांक्षा भी नहीं है। कोई द्वंद्व नहीं है इसलिए कुछ विशिष्ट होने की आकांक्षा भी नहीं है। ठीक है? क्योंकि कोई द्वंद्व नहीं है, तथा आन्तरिक रूप से कुछ ऐसा है जिसे प्रदूषित नहीं किया जा सकता है, छुआ नहीं जा सकता, नष्ट नहीं किया जा सकता, इसलिए मैं मनोवैज्ञानिक रूप से किसी अन्य पर निर्भर नहीं हूँ। इसलिए अनुरूपण, अनुकरण जैसा भी कुछ नहीं है।

अतः ऐसा मेरे साथ है, इसके बाद जो कुछ भी मेरी क्षमता है, जो कुछ भी मैं कर सकता हूँ वह मैं संसार में करूँगा - माली का काम हो अथवा रसोइये का या

कुछ भी। परन्तु आप सफलता, असफलता को लेकर बुरी तरह संस्कारबद्ध हैं। दुनिया में सफलता, धन, पद, प्रतिष्ठा, आप यह सब जानते हैं और आप इसी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। परन्तु यदि उनमें से कुछ भी न हो, तो आप जानते हैं कि मानव के भीतर क्या घटित होगा? चेतना में, मनुष्य की चेतना में क्या घटित होगा जो कि सफलता, तथा असफलता के भय के प्रति इतनी बुरी तरह से संस्कारबद्ध है? कुछ होने के लिए, मात्र बाहर ही नहीं बल्कि भीतरी तौर पर भी कुछ होने के लिए आप प्रयास करते हैं। यही कारण है कि आप गुरुओं को स्वीकार करते हैं, क्योंकि आप आशा करते हैं वह आपको किसी तरह के प्रबोधन की ओर, किसी तरह की भ्रांतिपूर्ण बकवास की ओर ले जाएगा। ऐसा नहीं है कि कोई समग्र सत्य नहीं है, पर उस तक आपको कोई ले जा नहीं सकता।

अतः, हमारी पूरी चेतना या उसका अधिकांश हिस्सा मानने और विश्वास करने के लिए तथा निरन्तर संघर्ष का जीवन जीने के लिए संस्कारबद्ध है, कारण कि हम कुछ-न-कुछ हासिल करना चाहते हैं, कुछ बनना चाहते हैं, कहीं कोई ख़ास भूमिका निभाना चाहते हैं, हम अपने को संतुष्ट करना चाहते हैं, जिसका मतलब है कि हम जो है उसे नकार रहे हैं – कृपया इसे ध्यान से सुनें – तथा जो होना चाहिए उसे स्वीकार कर रहे हैं। जो है उसे नकारने तथा जो होना चाहिए उसका आदर्श खड़ा करने के कारण द्वंद्व पैदा होता है। जबकि जो है उसे वास्तव में देखने का अर्थ है किसी विपरीत का न होना, बस जो है उसका होना। आप हिंसा को ध्यान से देखिए; यह शब्द पहले ही प्रदूषित हो चुका है, कुछ लोग हैं जो इसका समर्थन करते हैं और कुछ लोग हैं जो इसका विरोध करते हैं, अतः यह शब्द पहले ही विकृत हो चुका है। तो एक तरफ़ हिंसा है और दूसरी तरफ़ अहिंसा का पूरा दर्शनशास्त्र है, राजनैतिक, धार्मिक इत्यादि रूपों में। यानी हिंसा है और उसका विपरीत अहिंसा है। विपरीत का अस्तित्व इसलिए है क्योंकि आप हिंसा को जानते हैं। इसलिए विपरीत की जड़ें जो है में हैं। ठीक? हम सोचते हैं कि किसी विपरीत के होने से, किसी असाधारण विधि या तरीके से हम जो है उससे छुटकारा पा लेंगे। जो होना चाहिए उसको पाने के लिए समय की आवश्यकता होती है। आप देखिए हम क्या कुछ से गुजरते हैं, कितनी मुसीबत, संघर्ष और बेतुकेपन को झेलते हैं। जो है वह हिंसा है तथा जो होना चाहिए वह अहिंसा है। अहिंसा को साधने के लिए समय की आवश्यकता है, क्योंकि हम हिंसा और अहिंसा दोनों से संस्कारबद्ध हैं – हम कहते हैं कि मुझे समय चाहिए, मुझे प्रयास करना होगा, मुझे अहिंसक होने के लिए संघर्ष करना होगा। यही हमारा दर्शन है, यही संस्कार है, यही अच्छे और बुरे की परम्परा है।

अब क्या आप विपरीत को एक तरफ़ रख मात्र हिंसा को देख सकते हैं, जो कि एक तथ्य है? अहिंसा तथ्य नहीं है। अहिंसा एक विचार है, एक अवधारणा है, एक निष्कर्ष है। परन्तु तथ्य हिंसा है, तथ्य यह है कि आप क्रोधी हैं, आप किसी से घृणा करते हैं, आप दूसरों को आहत करना चाहते हैं, आप ईर्ष्यालु हैं, हिंसा में यह सब शामिल है और यही तथ्य है। क्या अब आप इस तथ्य को बिना कोई विपरीत बीच में लाये देख सकते हैं? आप समझे? तब आपके पास वह ऊर्जा होती है जिसे आप विपरीत को पाने की कोशिश में नष्ट कर रहे थे। तब आपके पास पूरी-की-पूरी ऊर्जा होती है जिससे आप जो है को पूर्णतया देख सकें। इस देखने में द्वंद्व कहीं नहीं होता।

अतः, वह व्यक्ति जो हिंसा, द्वंद्व और संघर्ष पर आधारित इस जटिल, असाधारण अस्तित्व को समझ लेता है, जो वास्तव में – न कि सिद्धांत में – इससे मुक्त हो जाता है, जिसका अर्थ है कि उसके पास कोई द्वंद्व नहीं रहता, तो वह व्यक्ति इस संसार में क्या करेगा? क्या आप मुझसे पूछेंगे या यह अपने आप से पूछेंगे? क्या आप यह प्रश्न अपने आप से पूछेंगे कि आप आन्तरिक रूप से, मनोवैज्ञानिक रूप से द्वंद्व व संघर्ष से मुक्त हैं? क्या आप यह करेंगे? स्पष्ट है कि नहीं। केवल द्वंद्व व संघर्ष में जकड़ा हुआ व्यक्ति ही यह कहता है, "यदि कोई संघर्ष नहीं होगा तो मैं समाप्त हो जाऊँगा, समाज मुझे नष्ट कर देगा।" क्योंकि समाज संघर्ष पर आधारित है। परन्तु समाज वैसा ही होता है जैसा आप इसे बनाते हैं, आपने ही समाज का निर्माण किया है, आप ही समाज के लिए उत्तरदायी हैं, क्योंकि आप लोभी, ईर्ष्यालु, हिंसक हैं और समाज वही है जो आप हैं। अतः आपमें और समाज में कोई फ़र्क़ नहीं है, आप ही समाज हैं। ये सब तथ्य हैं। आप अपने को समाज से अलग कर लेते हैं और कहते हैं, "मैं समाज से अलग हूँ", लेकिन यदि आपके भीतर समाये समाज के इस संपूर्ण ढाँचे में, जो कि हिंसा, अनैतिकता आदि पर आधारित है, पूर्ण परिवर्तन होता है तो आप समाज की चेतना में परिवर्तन लाते हैं। और जब आप इस तरह आन्तरिक रूप से मुक्त होते हैं, तब क्या आप यह प्रश्न पूछेंगे कि, ''मुझे बाहर क्या करना चाहिए?'' मान्यवर, अपने आप इसका उत्तर दें, पता लगाएँ कि इसका उत्तर क्या है, आप यह स्वयं करें, क्योंकि आन्तरिक रूप से आप उस चीज़ को पूरी तरह रूपान्तरित कर चुके हैं, जिसमें पूरी दुनिया संस्कारबद्ध है, यानी निरन्तर संघर्ष, युद्ध और संघर्ष।

क्या मैंने प्रश्न का उत्तर दे दिया? अपने लिए तो मैं बहुत पहले इसका उत्तर दे चुका हूँ। परन्तु क्या आप अपने सामने यह प्रश्न रखेंगे और किसी भ्रम, कल्पना, कुछ होने अथवा न होने की कामना के बगैर, जो कि द्वंद्व पैदा करते हैं, इसकी सत्यता का स्वयं पता लगाएँगे? इसका अर्थ होगा आन्तरिक रूप से उस चीज़ का सम्पूर्ण रूपान्तरण जिसे मनुष्य ने सबसे महत्त्वपूर्ण मान रखा है, यानी सतत संघर्ष, युद्ध, द्वंद्व इत्यादि।

ओहाय
३ अप्रैल, १९७७
अनुवाद : संजीव कुमार शर्मा